

"सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मनोसामाजिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन "

रणवीर सिंह

शोध कर्ता: ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल सहारनपुर

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम शर्मा

शिक्षा संकाय ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल सहारनपुर

सारांश

मनोसामाजिक सामाजिक और भावनात्मक कल्याण का वर्णन करने का एक तरीका है। अच्छा मानसिक स्वास्थ्य आपके बच्चे के स्वस्थ विकास के लिए महत्वपूर्ण है। मनोसामाजिक को कल्याण की एक स्थिति के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता का एहसास करता है, जीवन के सामान्य तनावों का सामना कर सकता है, उत्पादक और फलदायी रूप से काम कर सकता है और अपने समुदाय में योगदान करने में सक्षम होता है। अध्ययन ने सरकारी और निजी गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मनोसामाजिक का पता लगाने का प्रयास किया। यह मुजफ्फरनगर जनपद से यादृच्छिक रूप से चुने गए 100 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के नमूने के साथ एक अनुभवजन्य शोध था। अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति के माध्यम से किया गया था और डॉ अरुण कुमार सिंह और अल्पना सेन गुप्ता (1987) द्वारा विकसित मनोसामाजिक सूची का उपयोग डेटा संग्रह के लिए किया गया था। माध्य के बीच अंतर के महत्व का पता लगाने के लिए 'टी' परीक्षण लागू किया गया था। सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूलों के लड़के और लड़कियों के मनोसामाजिक में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। निजी सीनियर सेकेंडरी स्कूलों के लड़के और लड़कियों के मनोसामाजिक में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इस अध्ययन के निष्कर्षों के निष्कर्ष को भारत के साथ-साथ विदेशों में किशोरों के मनोसामाजिक की स्थिति के बारे में मौलिक भविष्य के अनुसंधान को डिजाइन करने के लिए विचार किया जा सकता है।

मूल शब्द:- मनोसामाजिक, सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय

परिचय

मनोसामाजिक भलाई का एक अनिवार्य हिस्सा है और आप अपने बच्चे के लिए मनोसामाजिक को बढ़ावा देने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। यह जानना भी मददगार है कि अगर आपको लगता है कि आपके बच्चे को मानसिक स्वास्थ्य समस्या है तो क्या करना चाहिए। मनोसामाजिक, अपने मूल शब्द मानसिक स्वच्छता से लिया गया है, मानसिक प्रक्रिया की वह स्थिति या गुणवत्ता है जो या तो स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है या किसी के कल्याण के लिए संभावित जोखिमों को निर्धारित करती है। मनोसामाजिक भावनात्मक और आध्यात्मिक लचीलापन है जो किसी व्यक्ति को जीवन का आनंद लेने और दर्द, पीड़ा और निराशा से बचने की अनुमति देता है। यह कल्याण की एक सकारात्मक भावना है और किसी की अपनी और दूसरों की गरिमा में एक अंतर्निहित विश्वास है। मनोसामाजिक इस बारे में है कि जीवन की स्थितियों का सामना करने पर कोई व्यक्ति कैसे सोचता है, महसूस करता है और कार्य करता है। मनोसामाजिक किसी के दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं और आदर्शों को संतुलित करने की क्षमता है। इसका अर्थ है जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने और उन्हें स्वीकार करने की क्षमता। मनोसामाजिक एक सूचकांक है जो दर्शाता है कि कोई व्यक्ति अपने पर्यावरण और सामाजिक, भावनात्मक या शारीरिक मांगों को पूरा करने में किस हद तक सक्षम है। हालांकि, जब कोई खुद को ऐसी स्थिति में फंसा हुआ पाता है, जहां उसके पास इससे प्रभावी ढंग से निपटने के लिए कोई रणनीति

नहीं होती है, तो वह मानसिक रूप से तनावग्रस्त हो जाता है। यह मानसिक स्वास्थ्य आम तौर पर दूसरों में चिंता, तनाव, बेचैनी या निराशा जैसे लक्षणों में परिलक्षित होता है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति सामाजिक मानदंडों के साथ अच्छी तरह से समायोजित होता है, हंसमुख, सामाजिक रूप से विचारशील, वास्तविकता को स्वीकार करता है, अपने व्यवसाय से संतुष्ट होता है और कम से कम घर्षण और तनाव के साथ रहता है और जीवन में आशावादी रहता है। मनोसामाजिक एक स्थिति और कार्य का एक स्तर है जो सामाजिक रूप से स्वीकार्य और व्यक्तिगत रूप से संतुष्ट है। मनोसामाजिक यह है कि लोग खुद को, अपने जीवन को और अपने जीवन में अन्य लोगों को कैसे देखते हैं, अपनी चुनौतियों और समस्याओं का मूल्यांकन करते हैं। इसमें तनाव को संभालना, अन्य लोगों से संबंध बनाना और निर्णय लेना शामिल है।

उद्देश्य

1. मनोसामाजिक अध्ययन करना।
2. निजी और सरकारी स्कूल में पढ़ाई करना।

मनोसामाजिक

मनोसामाजिक एक स्तर की मनोवैज्ञानिक भलाई या मानसिक विकार की अनुपस्थिति का वर्णन करता है। सकारात्मक मनोविज्ञान या समग्रता के दृष्टिकोण से, मानसिक स्वास्थ्य में व्यक्ति की जीवन का आनंद लेने की क्षमता, और जीवन की गतिविधियों और मनोवैज्ञानिक लचीलापन प्राप्त करने के प्रयासों के बीच संतुलन बनाना शामिल हो सकता है। मनोसामाजिक को भावनाओं की अभिव्यक्ति के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है, और मांगों की एक श्रृंखला के लिए एक सफल अनुकूलन को दर्शाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन मानसिक को "एक ऐसी भलाई की स्थिति के रूप में परिभाषित करता है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं का एहसास करता है, जीवन के सामान्य तनावों का सामना कर सकता है, उत्पादक और फलदायी रूप से काम कर सकता है, और अपने समुदाय में योगदान करने में सक्षम होता है"। पहले यह कहा गया था कि मनोसामाजिक की कोई एक "आधिकारिक" परिभाषा नहीं थी। सांस्कृतिक अंतर, व्यक्तिपरक आकलन और प्रतिस्पर्धी पेशेवर सिद्धांत सभी प्रभावित करते हैं कि "मनोसामाजिक" को कैसे परिभाषित किया जाता है। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के विभिन्न प्रकार हैं, जिनमें से कुछ सामान्य हैं, जैसे अवसाद और चिंता विकार, और कुछ इतने सामान्य नहीं हैं, जैसे सिज़ोफ्रेनिया और द्विध्रुवी विकार। हाल ही में, वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य का क्षेत्र उभरा है, जिसे "अध्ययन के क्षेत्र" अनुसंधान और प्रथाओं के रूप में परिभाषित किया गया है जो मानसिक स्वास्थ्य में सुधार और दुनिया भर में सभी लोगों के लिए मानसिक स्वास्थ्य में समानता प्राप्त करने पर प्राथमिकता देता है।

सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय

आत्म-सम्मान को व्यापक रूप से लोगों की अपनी आत्म-अवधारणाओं के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में समझा जाता है, जो यह दर्शाता है कि व्यक्ति अपने बारे में कैसा महसूस करता है, जिसमें आत्म-मूल्य और आत्म-सम्मान की भावना भी शामिल है। आत्म-सम्मान को अकादमिक प्रदर्शन के साथ सकारात्मक रूप से और किशोर अपराध और अवसाद के साथ नकारात्मक रूप से सहसंबंधित दिखाया गया है और यह किशोरों को जोखिम कारकों से बचाता है। किशोरों के शैक्षणिक और व्यापक जीवन क्षेत्रों में आत्म-सम्मान की सकारात्मक भूमिका और महत्व के एक चर के रूप में व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर बढ़ते फोकस के कारण, सरकारी और निजी स्कूल क्षेत्रों में मनोसामाजिक के साथ इस चर की जांच और तुलना करना उचित है। माता-पिता की अक्सर यह धारणा होने के बावजूद कि निजी स्कूल की शिक्षा उनके बच्चों के लिए बेहतर शैक्षणिक, सामाजिक और व्यक्तिगत परिणामों की ओर ले जाएगी, निजी और सरकारी क्षेत्र की जांच करने वाले अधिकांश अध्ययनों ने अलग-अलग परिणामों के साथ, केवल शैक्षणिक परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया है। सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयके बीच गैर-शैक्षणिक अंतरों की खोज करने वाला साहित्य बेहद सीमित है। शोधकर्ता द्वारा किए गए एक अध्ययन में कक्षा 7 से 12 तक मुजफ्फर नगर जनपद के 13000 सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों में भावनात्मक समायोजन की जांच की गई। अवसाद, आत्महत्या और हिंसक स्वभाव की जांच करने वाली स्व-रिपोर्ट प्रश्नावली का उपयोग करके भावनात्मक समायोजन के स्तर को मापा गया, जिसमें अवसाद का स्तर कम था, पिछले वर्ष

कोई आत्महत्या का प्रयास नहीं किया गया था, और पिछले वर्ष कोई हथियार का उपयोग करने की धमकी नहीं दी गई थी मेलबर्न में सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में 10वीं कक्षा के 729 छात्रों का उपयोग करते हुए, स्कूल के प्रति दृष्टिकोण को तीन बोर्ड आयामों पर मापा गया, जिसमें छात्र स्कूली शिक्षा के उद्देश्य और मूल्य को किस तरह समझते हैं, छात्र अपने स्कूल की सामाजिक व्यवस्था को किस तरह समझते हैं और शिक्षकों के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण। जबकि निजी स्कूल के छात्रों ने शिक्षकों के प्रति सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित नहीं किया। प्रतिभागियों की पृष्ठभूमि कारकों को नियंत्रित करने के बाद भी ये निष्कर्ष बने रहे। लैम्ब के परिणाम से पता चलता है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयके छात्र, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, स्कूल के काम के मूल्य के प्रति व्यक्तिगत लगाव प्रदर्शित करने और स्कूल की सकारात्मक छवि रखने की अधिक संभावना रखते हैं।

अनुसंधान क्रियाविधि

दलील

यह अध्ययन किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-सम्मान को देखने के लिए किया गया है। किशोरावस्था संक्रमण की अवधि है जिसमें व्यक्ति चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करता है जो उसे भ्रम और परेशानियों में डाल सकती हैं। यह एक ऐसा दौर भी है जब युवा पुरुष और महिलाएं वयस्कता के लिए तैयार हो सकते हैं। किशोरों की भलाई और इसमें योगदान देने वाले कारकों को समझना किशोरों को जीवन के लिए बेहतर तरीके से तैयार करने के तरीकों को स्पष्ट और परिभाषित करने में मदद करेगा। इस अध्ययन में हम यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि किशोरावस्था में मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-सम्मान से लड़के और लड़कियां किस तरह प्रभावित होते हैं

चर

स्वतंत्र चर

निजी/सरकारी स्कूल

लिंग

आश्रित चर

आत्म सम्मान

मनोसामाजिक

अध्ययन का उद्देश्य

मानसिक स्वास्थ्य में निजी और सरकारी छात्रों के बीच महत्वपूर्ण अंतर होगा। आत्म-सम्मान में निजी और सरकारी छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा। मानसिक स्वास्थ्य में पुरुष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा। आत्म-सम्मान में पुरुष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

नमूना

इस अध्ययन का नमूना मुजफ्फरनगर क्षेत्र के निजी और सरकारी स्कूलों से लिया गया था। छात्रों की सहमति के बाद डेटा भरा गया था। 120 छात्रों में से 60 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयसे और 60 सरकारी स्कूलों से थे। इस अध्ययन के लिए मुजफ्फरनगर से 30 लड़के और 30 लड़कियों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था।

साधन

आत्मसम्मान सूची (1977) आत्मसम्मान सूची पैमाना प्रक्रिया एम एस प्रसाद और जी पी ठाकुर द्वारा विकसित किया गया था। आत्मसम्मान सूची पैमाने में 59 आइटम शामिल हैं जिनमें से 7 विकल्प पूरी तरह से सही, काफी हद तक सही, पूरी तरह से गलत हैं। पुनः परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक के मूल्यांकन के लिए छह सप्ताह के अंतराल के बाद फिर से सूची की विश्वसनीयता की स्थापना की गई, जो क्रमशः व्यक्तित्व द्वारा देखे गए स्वयं और सामाजिक रूप से देखे गए स्वयं के लिए .82 और .78 निकली। 400 छात्रों में से 150 छात्रों को पुनः परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक के मूल्यांकन के लिए छह सप्ताह के अंतराल के बाद फिर से सूची के दो सेट दिए गए। दोनों परीक्षणों के लिए पुनः परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक पाए गए जो व्यक्तिगत रूप से देखे गए स्वयं और सामाजिक रूप से देखे गए स्वयं के लिए क्रमशः .69 और .66 थे। परीक्षण-पुनःपरीक्षण (2 माह का अंतराल) और विभाजित अर्ध विश्वसनीयता गुणांक की गणना प्रमोद कुमार की मानसिक स्वास्थ्य जांच सूची के साथ पैमाने द्वारा की गई और यह .79 पाया गया।

प्रक्रिया

कुल 120 (60 लड़के और 60 लड़कियाँ) छात्रों का नमूना लिया गया। शुरुआती दौर में उन्हें अध्ययन के बारे में बताया गया, उसके बाद उनकी लिखित सहमति ली गई। उनके सामाजिक-जनसांख्यिकीय विवरण एकत्र किए गए और मानसिक स्वास्थ्य पैमाना, तनाव पैमाना और आत्म-सम्मान का प्रबंधन किया गया। पूरा अध्ययन 25 दिनों की अवधि में स्कूलों में हर दूसरे दिन जाकर किया गया।

परिणाम और चर्चा

वर्तमान अध्ययन किशोरों में आत्म-सम्मान और मानसिक स्वास्थ्य का पता लगाने के लिए किया गया था, अध्ययन की तैयारी की गई परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए डेटा संग्रह और छानबीन के बाद डेटा को सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए रखा गया था।

तालिका में दिए गए उपरोक्त डेटा से पता चलता है कि सरकारी स्कूलों के मानसिक स्वास्थ्य का औसत 59.15 है जबकि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयका औसत 47.25 है और टी-वैल्यू 4.42 है। टी के महत्वपूर्ण मूल्य की तालिका का संदर्भ लेने पर, तालिका से पता चलता है कि सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयके मानसिक स्वास्थ्य के बीच (0.01 स्तर पर) महत्वपूर्ण अंतर है। इसलिए पहली परिकल्पना को खारिज कर दिया जाता है।

तालिका 1: सूची मनोसामाजिक सूची पर सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों का औसत, मानक विचलन और टी-मूल्य दिखाती है।

चर	समूह	अर्थ	एस डी	टी मूल्य	पी
मनोसामाजिक	सरकारी स्कूल	59A5	17.86	4.42	0.000
	निजी स्कूल	47.25	10.74		

तालिका 2: सूची सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों के आत्म-सम्मान सूची पर औसत, मानक विचलन और टी-मूल्य दिखाती है

चर	समूह	अर्थ	एस डी	टी मूल्य	पी
आत्म सम्मान	सरकारी स्कूल	230.83	42.65	0.68	0.49
	निजी स्कूल	235.58	32.66		

तालिका में दिए गए उपरोक्त डेटा से पता चलता है कि सरकारी स्कूलों के मानसिक स्वास्थ्य का औसत 230.83 है जबकि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयका औसत 235.58 है और टी-वैल्यू 0.68 है। टी के महत्वपूर्ण मूल्य की तालिका का संदर्भ लेने पर, तालिका से पता चलता है कि सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयके मानसिक स्वास्थ्य के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। इसलिए दूसरी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

तालिका 3: सूची मनोसामाजिक सूची पर सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों का औसत, मानक विचलन और टी-मूल्य दिखाती है।

चर	समूह	अर्थ	एस डी	टी मूल्य	पी
आत्म सम्मान	सरकारी स्कूल	230.83	42.65	0.68	0.49
	निजी स्कूल	235.58	32.66		

तालिका में दिए गए उपरोक्त डेटा से पता चलता है कि सरकारी स्कूलों के मनोसामाजिक का औसत 55.1 है जबकि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयका औसत 51.38 है और टी-वैल्यू 1.26 है। टी के महत्वपूर्ण मूल्य की तालिका का संदर्भ देते हुए, तालिका से पता चलता है कि सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयके मानसिक स्वास्थ्य के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। इसलिए दूसरी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

तालिका में दिए गए उपरोक्त डेटा से पता चलता है कि सरकारी स्कूलों के मानसिक स्वास्थ्य का औसत 228.3 है जबकि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयका औसत 238.12 है और टी-वैल्यू 1.42 है। टी के महत्वपूर्ण मूल्य की तालिका का संदर्भ लेने पर, तालिका से पता चलता है कि सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयके मानसिक स्वास्थ्य के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। इसलिए दूसरी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के बाद हमारी तीन परिकल्पनाओं को स्वीकार किया गया और एक परिकल्पना को खारिज कर दिया गया। परिणाम बताते हैं कि सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयके बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि निजी स्कूल सरकारी स्कूलों की तुलना में छात्रों को बेहतर सुविधाएँ प्रदान करते हैं। इसलिए इन स्कूलों के छात्र मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं। लेकिन पुरुष और महिला छात्रों के आत्मसम्मान और मानसिक स्वास्थ्य में कोई अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि (तालिका-1) से, सरकारी और निजी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के लड़कों के मनोसामाजिक में महत्वपूर्ण अंतर है। आंकड़ों के आगे विश्लेषण से पता चला है कि (तालिका-2), कि सरकारी और निजी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की लड़कियों के मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण अंतर है। इसी तरह, (तालिका-3) के विश्लेषण से, यह देखा जा सकता है कि सरकारी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के लड़के और लड़कियों के मनोसामाजिक में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। आंकड़ों के आगे विश्लेषण से पता चला है, कि निजी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के लड़के और लड़कियों के मनोसामाजिक में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। पिछले शोध निष्कर्षों के संबंध में, निजी और सरकारी स्कूल के छात्रों के मनोसामाजिक में बड़े अंतर पाए गए थे, लेकिन वर्तमान अध्ययन में ऐसा कोई अंतर नहीं दिखा। पुरुष और महिला छात्रों के आत्मसम्मान और मनोसामाजिक में अंतर पाया गया।

संदर्भ

1. लॉरेस डी. वयस्क शिक्षार्थियों के साथ आत्म-सम्मान का निर्माण। कैलिफ़ोर्निया, 2020।
2. मालबी आर.एस., रीज़नर आर.डब्ल्यू. आत्म-सम्मान, बढ़ाना। कुआलालंपुर: सेल्फ-एस्टीम सेमिनार एसडीएन. बीएचडी, 2020।
3. केरमोड के. मानसिक विकार के उपचार और परिणामों के बारे में सामुदायिक मान्यताएँ: भारत के मुजफ्फरनगर जनपद के एक ग्रामीण क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य साक्षरता सर्वेक्षण, सामुदायिक स्वास्थ्य, वी, 2019; 123:476-483।
4. नंदी एस. बंगाली माध्यम माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की संगठनात्मक तनाव विशेषताएँ। शैक्षिक समीक्षा, 2020, 17-19।
5. पूजा। खेल और गैर-खेल गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का एक अध्ययन। एकेडेमिकिया: एक अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक शोध पत्रिका। 2019; 2(3)।
6. टेकेडा एफ, योकोयामा ई, ओहिडा टी. सामाजिक कार्यकर्ताओं और सामाजिक कल्याण अधिकारियों में मानसिक स्वास्थ्य और नौकरी के कारक, जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन, 2020, 39(1)।
7. बसु सारा। लिंग और मानसिक स्वास्थ्य- प्राथमिक विद्यालयों और कॉलेजों के शिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा में प्रयोग, 2019, XXXVI(12)।
8. बिंदु सी.एम. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि और तनाव से निपटने के कौशल के बीच संबंध, एडु ट्रैक्स, 2019; 6(2):34-36.
9. दक्षिणामूर्ति आर. तनाव और मानसिक स्वास्थ्य, जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च। 2019, 25(1)।
10. डालबर्ग केएम, वैर्न एम, रूनसन बी. एक सुलेश समुदाय के नमूने में मानसिक स्वास्थ्य साक्षरता और दृष्टिकोण - मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के व्यक्तिगत अनुभव की भूमिका की जांच, बीएमसी पब्लिक हेल्थ, 2019, 8(8)।
11. कौर सतविंदरपाल. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच शिक्षक प्रभावशीलता के संबंध में व्यावसायिक तनाव, एडु ट्रैक, 2019, 7(10)।
12. पंचाल, डॉ. संयुक्त और एकल परिवार के किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य और मनोवैज्ञानिक कल्याण। इंजीनियरिंग में तकनीकी अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2019, 1(4)।
13. पूजा। खेल और गैर-खेल गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का एक अध्ययन। एकेडेमिकिया: एक अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक शोध पत्रिका। 2021; 2(3)।
14. प्रभु जी. भारत में बाल और किशोर मानसिक स्वास्थ्य अनुसंधान: एक अवलोकन निमहंस जर्नल, 2019; 5:79-89.
15. सिंह ए.के., कुमारी एस. मानसिक स्वास्थ्य व्यवहार पैटर्न और व्यक्तित्व कारकों के एक कार्य के रूप में, इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन। 2019, 39(1)।
16. विजयलक्ष्मी और. तनाव को कम करने के लिए शिक्षक तनाव से निपटने की रणनीति, एडुट्रैक, 2019; 7(12)।

17. मार्टिन जी, रिचर्डसन एस, बर्गन एचए, रोजर एल, एलिसन एस. किशोरों में आत्महत्या के जोखिम के आकलन की आवश्यकता के संकेतक के रूप में माना जाने वाला शैक्षणिक प्रदर्शन, आत्म-सम्मान और नियंत्रण का स्थान: शिक्षकों के लिए निहितार्थ। जर्नल ऑफ एडोलसेंस। 2020; 28(1):75-87।
18. रेडेनबैक एस. आत्म-सम्मान, सफलता के लिए आवश्यक घटक। यूएसए: एस्टीम सेमिनार कार्यक्रम और प्रकाशन, 2019।